कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या 2389876

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें ।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ✓

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 30/03/2024

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15¼ को 16, 17½ को 18, 19¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	15	19	4
2	7	20	4
3	10	21	
4	2	22	
5	2	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	3	31	
14	4	योग	80
15	4	प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16	4	अंकों में	शब्दों में
17	3	80	अस्सी
18	4		

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक 61384

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में बोर्ड द्वारा प्रदत्त 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 177/2024

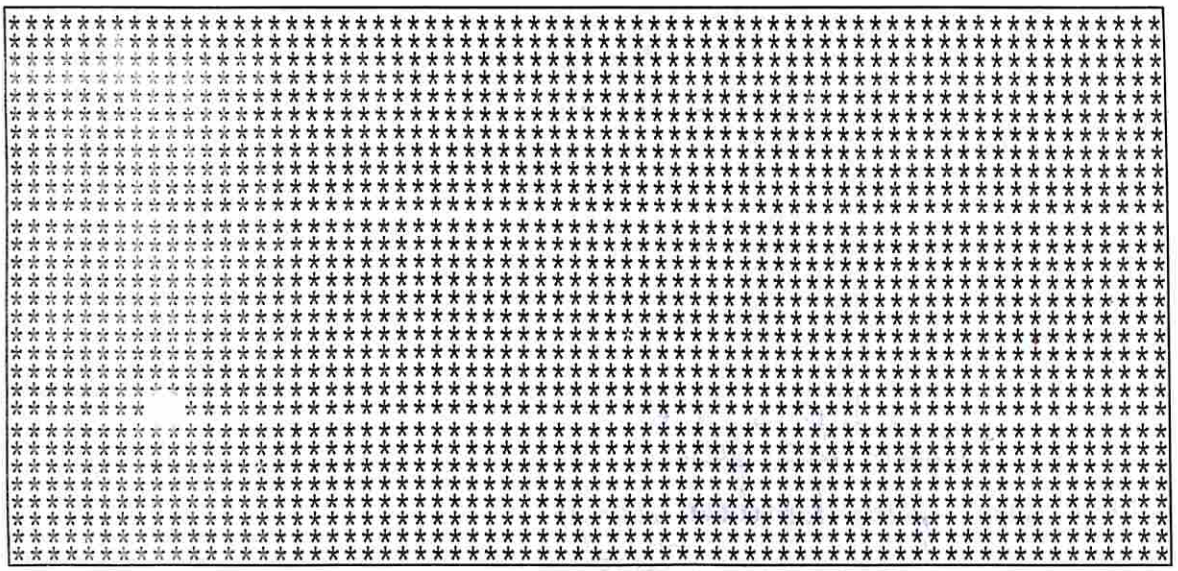

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी :–
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		खण्ड अ
	प्र० 1.	
15	(i)	(ब) देवालयस्य ग्रामे।
	(ii)	(स) शत्रुः।
	(iii)	(स) विद्याधनम्।
	(iv)	(द) ककम्पस्य।
	(v)	(अ) धूमम्।
	(vi)	(स) बुद्धि
	(vii)	(ब) पशुपतिस् + चलति।
	(viii)	(स) पण्डितोजनः।
	(ix)	(ब) सम्यगुक्तम्।
	(x)	(अ) नमस्ते।
	(xi)	(स) रामश्च लक्ष्मणश्च।
	(xii)	(ब) नीलकमलम्।
	(xiii)	(ब) बहुव्रीहिः।

कृ. पृ. उ.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(xiv)	(अ) उद् ।
	(xv)	(अ) दुर् + बलम् ।
	प्र० (i)	सा कुमारी गीतं गायति ।
	(ii)	गुणवान संसारे पुज्यते ।
	(iii)	लोकहितं मम करणिय ।
	(iv)	तव नाम किम् ?
	(v)	छात्राय स्वस्ति ।
	(vi)	सः कन्दुकेन क्रिडति ।
	(vii)	अहः अहं कार्यं करिष्यामि ।
	उ० प्र० क (i)	अनुशासनस्थ ।
	(ii)	छात्राः ।
	(iii)	अनुशासित जनः ।

BSER-177 2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	ख (i)	समाजे नियमानां पालनम् अनुशासनं भवति।
	(ii)	सामाजिकव्यवस्थायै अनुशासनमत्यन्तम् आवश्यकमस्ति।
	(iii)	यः नरः पूर्णतया अनुशासनं पालयति सः स्वजीवने सदा सफलः भवति।
	(ग)	अनुशासनस्य महत्वं।
	घ (i)	~~भवति~~। अनुशासन।
	(ii)	अनुशासनम्।
	(iii)	अप्रियः - प्रियः।
	(iv)	भवति।

खण्ड ब

	(ब) (i)	118 → अष्टादशाधिकशतम्।
	(ii)	222 → द्विविंशत्याधिकद्विशतम्।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड ब

प्र० 5.

उ० विभक्ति → द्वितिया विभक्ति।

कारणं → 'निकषा' शब्दस्य योगे द्वितिया विभक्ति भवति।

1

प्र० 5.

उ०. रामं नमः।

संशोधन → रामाय नमः।

1

प्र० 6.

उ० सुरभिपः ताम् अपृच्छत।

प्रश्न → कः ताम् अपृच्छत ?

1

प्र० 7.

उ० सर्वे प्रकृति मातरं प्रणमन्ति।

प्रश्न → सर्वे काम् प्रणमन्ति ?

1

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 8.

उ० प्रसंग → प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक शेमुषि द्वितिय भाग के 'सुभाषितानि' नामक पाठ से उद्धृत है। प्रस्तुत श्लोक में कवि हमे सूर्य के उदाहरण से कहना चाहता है कि -

हिन्दी → महान लोग सम्पत्ति और विपत्ति में अपना व्यवहार समान रूप से रखते हैं। जिस प्रकार सूर्य उगते समय और अस्त होते समय रक्त (लाल) होता रहता है।

भावार्थ → कवि सूर्य का उदाहरण देकर मनुष्य को महान लोगो के लक्षण से परिचित करवा रहा है। जिस प्रकार सूर्य उदय होते समय और अस्त होते समय समान रूप से लाल रहता है। उसी प्रकार महान व्यक्ति का व्यवहार दुःख और सुःख में समान रूप से रहता है।

प्र० 9.

उ० राज्ञः प्रजानां सुखं प्रजानां हिते हितं च,
आत्मप्रियं राज्ञः न हितं तु प्रजानां प्रियं हितम्।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	प्र० 10.	
	उ०	आलस्यं ही मनुष्याणां शरीरस्थो महान रिपुः
		नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसिदति ॥1॥
2		गुणी गुणं वेत्ती न वेत्ती निर्गुणो,
		बली बलं वेत्ती न वेत्ती निर्बलः।
		पिकः वसंतस्य गुणं न वायसः,
		करिः च सिंहस्य बलं न मूषकः ॥2॥
	प्र० 11.	
	उ० 11.	प्रस्तुत कहानी हमारी पाठ्यपुस्तक शेमुषी भाग द्वितिय से उद्धृत है। प्रस्तुत पाठ के लेखक दिङ्नाग है। यह पाठ मूलतः दिङ्नाग द्वारा विरचित कुन्दमाला से लिया गया है। एक बार एक कृषक अपने दोनों बैलों के साथ अपना खेत जोत रहा था। उन दोनों बैलों में से एक बैल बहुत कमजोर था। वह खेत जोतने में सक्षम नहीं था। इसलिए वही खेत में ही गिर गया। कृषक उसे उठाने की कोशिश कर रहा था। परन्तु दुर्बलता के कारण वह उठने में सक्षम नहीं था। अपने पुत्र की यह दुर्दशा देखकर गायों की
2		

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

माता सुरभि रोने लगी। सुरभी माता को यूँ रोता देख देवराज इन्द्र ने उनसे उनके रोना का कारण पूँछा उन्होंने सारा वृतांत सुनाया। उन्होंने कहा कि माता के लिए उसके सारे पुत्र समान होते हैं, परंतु माता की कृपा अपने दुर्बल पुत्रों पर ज्यादा होती है। यह सब सुनकर देवराज इन्द्र ने बारिश कर दी जिसके कारण कृषक उन दोनों बैलों को घर लेकर चला गया।

BSER-177/2024

प्र० 12.

उ०

	(क)	(ख)
(i)	कानने	वने।
(ii)	जम्बुकः	शृगालः।
(iii)	वेला	समयः।
(iv)	दिनकरः	चन्द्रः।

प्र० 13.

(i) अश्वः जवेन धावति।

(ii) पिपीलिका शनैः चलति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(iii)	ग्रमात् बहि: विद्यालय: अस्ति।
		खण्ड स
	14. प्र०	अथवा
	क. (i)	सिंह:।
	(ii)	नदी।
	ख. (i)	वानरा: सिंहं तुदन्ति।
	(ii)	एक: वानर: पुच्छं धुनाति।
	ग. (i)	हर्ष मिश्रितं।
	(ii)	आरोहति।
	15. प्र०	
	क. (i)	वायुमण्डलं।
	(ii)	धरातलम्।
	ख. (i)	भक्ष्यं कुत्सितवस्तुमिश्रितं जातम्।
	(ii)	बहुशुद्धिकरणं बहिरन्तर्जगति करणीयम्।

BSER-177 2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(ग) (i)	जलम् ।
	(ii)	करणीयम् ।
	प्र० 16.	
	क (i)	रामः ।
	(ii)	विदूषक!
	ख (i)	वयमत्र कुशलप्रश्नस्य भाजनम्।
	(ii)	राजासनं खल्वेतत् न युक्तमध्यासितुम् ।
	(ग) (i)	स्पर्शः ।
	(ii)	तां ।
	प्र० 17.	
	उ० (i)	एकस्मिन वने एकः सिंहः वसति स्म।
	(ii)	एकदा सः जाले बद्धः।
	(iii)	सः सम्पूर्ण प्रयासम् अकरोत् परं बन्धनात न मुक्तः ।
	(iv)	तदा तस्य स्वरं श्रुत्वा एकः मूषकः तत्र आगच्छत् ।
	(v)	मूषकः परिश्रमेण जालम् अकृन्तत्!

क्र. पृ. उ.

BSER-17/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(vi) सिंह: जालात् मुक्त: भूत्वा मूषकं प्रशंसन् गतवान् ।

खण्ड द

प्र० 19. अथवा

उ० अध्यापक: - प्रवीण! त्वम् अत्र किं करोषि?
प्रवीण: - हे गुरो! अहं अधुना किमपि न करोमि।
अध्यापक: - तर्हि गच्छ । तव मित्राणि तत्र क्रिडाङ्गणे क्रीडन्ति तैः सह क्रीड।
प्रवीण: - मम क्रीडायाम् रुचिः नास्ति। अतः अहं न क्रीडामि।
अध्यापक: - स्वस्थशरीरस्य स्वस्थमनसः च कृते क्रीडायाः अस्माकं जीवने महती आवश्यकता भवति।
प्रवीण: - यदि अहं क्रीडायां ध्यानं दास्यामि तर्हि मम अध्ययनम् बाधितं भविष्यति।
अध्यापक: - क्रीडायै स्वल्पसमयम् एव प्रयच्छ। अल्पसमय: अपि शरीराय बहुलाभम् प्रदास्यति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 18.

उ० अथवा

प्रिय सखि गीते!
सादरं नमोनमः

अत्र कुशलम् तत्रास्तु! ह्यः अहम् उद्यानभ्रमणार्थं गतवती। उद्याने पशुपक्षिणः आसन्। तत्र जनाः इतस्ततः भ्रमन्ति स्म। श्वेत कपोतः तत्रासीत्। तत्र उद्याने जनाः एकत्र उपविश्य भोजनम् खादन्ति स्म। अहं नद्यां नौकाविहारम् कृतवती। उद्यानभ्रमणम् आनन्ददायकम् आसीत्।

भवदीया सखी
शारिका।

प्र० 20.

वयं छात्राः सन्ति।
(i) गोविन्दः श्व आगमिष्यति।
(iii) सः अश्वात् पतति।
(v) सः उच्चै हसति।
(iv)

समाप्तम्!

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

HSI R 177 2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177-2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-17 2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ISSER-1.7.2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-17-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177 2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSFR-177/2024